'आस पास' 25th July. 1975

[illegible], २५ जुलाई १९७५, पत्र ७

संगीत

जितने घराने उतने अंदाज

अमरनाथ

घराना प्रथा को लेकर संगीत की दुनिया में खासी बहस है। आज के कुछ कम सिखुए गायकों को यह प्रथा बेतुकी और गैरजरूरी लगती है। इस सिलसिले में दिए गए इनके तर्कों से कई बार लगता है जैसे वे संगीत को गंभीरता से न सीखने — परखने की अपनी प्रवृत्ति के बारे में बोल रहे हों।

रेडियो सुन कर या किसी को रियाज करते पाकर किसी स्थाई के मुखड़े या राग की आरोही-अवरोही को उड़ा लेना अपने आप में संगीत की पूर्ण शिक्षा नहीं होती। गाना सीखना इतना सहल हो जाए तो सचमुच घरानों की जरूरत न रह जाए, या अगर थोड़ी-बहुत रह भी जाए तो उसे संगीत प्रभाकर, प्रवीण, विशारद आदि परीक्षाएं देकर पूरा किया जा सकता है। पुराने घरानेदार लोग रियाज करते रह जाते हैं और मंच पर भाषण देकर या कालेजों-विश्वविद्यालयों की प्रोफेसरी हासिल करके धुरंधर संगीतकार कहलाने का श्रेय वे लोग पा लेते हैं, जो संगीत की व्याख्या अधिक करते हैं और सुर कम लगाते हैं।

सुनने में यह बहुत अच्छा लगता है कि संगीत में जहां जो अच्छा मिल जाए उसे अपना लेना चाहिए। किंतु, क्या उन तमाम अच्छे तत्वों को एक साथ इस्तेमाल करना श्रेयस्कर है? अधिक से अधिक जानकारी रखना कभी बुरा नहीं, पर कहां क्या सजता है, यह न जानने से अच्छा है उतना ही जानना, जितना जरूरी हो।

सभी घरानों के लोग दरबारी, मालकौंस और कल्याण गाते हैं। चलन भी सब घरानों में एक है। किंतु, राग को कोई चौड़े आकार से गाता है, कोई गोल से। किसी की गमक अच्छी है तो किसी की बोलतान; किसी घराने की राग बढ़ने की रीत सुंदर है तो कोई सरगम कहने में प्रवीण है।

अगर किसी ने कोई नई बात सोची और लोग उसके रास्ते पर चलने लगें तो नया घराना जन्म लेता है। ऐसा किसी विशेष योजना के अंतर्गत नहीं हुआ करता। किसी जमाने में पटियाला घरानेवालों ने ग्वालियर घराने के पूर्वजों से जरूर गाना सीखा होगा, इसीलिए दोनों घरानों में तकनीकी लिहाज से ज्यादा फर्क नहीं है। किंतु रसास्वादन की दृष्टि से दोनों में अंतर अवश्य है और उसी आधार पर दोनों अलग-अलग घराने हैं।

घराना संगीत-कर्म से चलता है, किसी विशेष परंपरा या खानदान में जन्म लेने मात्र से नहीं। अमीर खान साहब से पहले इंदौर घराना नहीं था। किंतु कोई नहीं कह सकता कि यह नया घराना नहीं चलेगा। जो लोग अमीर खान साहब की गायन-शैली को अपनाएंगे, वे इंदौर घराने में जन्म न लेकर भी इंदौर घराने के कहलाएंगे। इसके विपरीत किसी के प्रसिद्ध संगीतकार तन्न रसखान के वंशज मोती महल में कव्वाली गाते हैं। उन्हें कौन किसी घराने का मानेगा?

एक से अधिक घरानों में संगीत-शिक्षा प्राप्त करने पर भी यदाकदा गौर किया जाता है। ऐसा हुआ भी है। किंतु कब और क्यों? हमारे दादा गुरु शाहमीर खान साहब भिंडी

उस्ताद अमीर खां के साथ लेखक